जैसे पशु आहार की व्यवस्था, मिनरल मिक्सचर, थनैला की रोकथाम, पेट में कीड़े मारने की दवा एवं जागरूकता कार्यक्रमों के अंतर्गत विभिन्न महत्वपूर्ण जानकारियों से अवगत कराया।

प्रथम दिन समिति ने 60 लीटर दूध एकत्र किया एवं धीरे-धीरे गाँव के अन्य उत्पादक बन्धु भी जुड़ने लगे।

वर्तमान में खजूरी तुर्कडीह समिति दूध उत्पादकों से सुबह में 80-100 लीटर दूध एकत्र कर रही है, अधिकतर दूध उत्पादक शाम का दूध घर के उपयोग के लिए रखते हैं। दूध उत्पादक पहले की तुलना में अब बहुत अधिक प्रसन्न हैं, क्योंकि पहले उन्हें दूध का मूल्य उसकी गुणवत्ता के आधार पर नहीं मिल पाता था। परन्तु जैसे-जैसे जागरूकता फैल रही है, धीरे-धीरे दूध उत्पादक समिति के स्तर पर अति आधुनिक फैट जांच करने वाली मशीन उपलब्ध कराने का निवेदन भी करने लगे हैं, दुग्ध संघ के क्षेत्र पर्यवेक्षकों ने दूध उत्पादकों को आश्वासन दिया कि राज्य सरकार की योजना के अंतर्गत सभी कार्यरत समितियों को डी.पी.एम. सी.यू., भी उपलब्ध कराए जायेंगे। परन्तु दूध उत्पादक अभी भी पशुपालन को पुराने दृष्टिकोण से देखते हैं, नई वैज्ञानिक पद्धति को नहीं अपना रहे हैं। गोंडा दुग्ध संघ के क्षेत्र पर्यवेक्षकों से अनुरोध किया गया कि वे आगामी ग्राम स्तरीय कार्यक्रमों में वैज्ञानिक पद्धति द्वारा पशुपालन पर चर्चा करें। दूध उत्पादकों ने विश्वास दिखाया कि वे अपनी समिति को हमेशा मजबूत बनाए रखेंगे एवं दूधिया या अन्य किसी प्राइवेट संस्था के लुभावन में नहीं आयेंगे।

समिति के विषय में कुछ संक्षिप्त जानकारी निम्न तालिका में दी गयी है।

| **उत्पादक सदस्य** | **पुरूष** | **महिला** | **एससी/एसटी** |
|---|---|---|---|
| | **30** | **10** | **5** |
| दूध उत्पादन (ली.) | सुबह | शाम | कुल |
| | 61.90 | 57.70 | 119.6 |
| फैट | 5.30 | | 5.30 |
| एस.एन.एफ | 8.30 | | 8.30 |

*मोहम्मद राशिद, प्रबन्धक-सी.एस. एन.डी.डी.बी., लखनऊ*

# गांधी एवं शास्त्री जयंती

राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड, प्रधान कार्यालय, आणंद में 2 अक्तूबर, 2017 को गांधी जयंती एवं शास्त्री जयंती समारोह का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। कार्यक्रम के आरंभ में आनंदालय के बच्चों ने बापू के प्रेरक भजन सुनाए। आमंत्रित अतिथि वक्ताओं डॉ. जगदीश डी. सोलंकी, प्रोफेसर, एम एस यूनिवर्सिटी, वडोदरा तथा डॉ. जयालक्ष्मी आर. महंती, सहायक प्रोफेसर एम एस यूनिवर्सिटी ने क्रमश: राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी एवं पूर्व प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री जी के जीवन दर्शन पर व्याख्यान दिए।

डॉ. जगदीश डी. सोलंकी ने अपने व्याख्यान में गांधी जी के त्याग, सत्याग्रह एवं अहिंसा की प्रासंगिकता का उल्लेख करते हुए बताया कि गांधी जी न केवल भारत भर में अपितु वैश्विक स्तर पर प्रासंगिक हैं। उनकी मोहन से महात्मा बनने की यात्रा बहुत ही रोचक और प्रेरक है। उनका नेतृत्व स्वैच्छिक था न कि राजनीति से प्रेरित। वे संरक्षक तथा ट्रस्टीसिप की संकल्पना के पक्षधर थे। अपनी आत्मकथा सत्य के साथ प्रयोग में गांधी जी का कथन 'मेरा जीवन ही मेरा संदेश है' गांधी जी को समझने का एक सूत्र वाक्य है। गांधी जी वस्तुत: सर्वधर्म समभाव के पोषक, प्रतिरोध के कुशल प्रबंधक एवं पवित्र अंत:करण वाले आदर्श विचारक थे। अपने व्याख्यान के अंत में डॉ. सोलंकी ने यह जोर देते हुए कहा कि गांधी न केवल एक व्यक्ति, न केवल एक संस्था अपितु एक आदर्श विचार हैं जो युगों-युगांतरों तक अपने जीवंत विचारों से करोड़ों लोगों को स्वच्छता, पवित्रता, सत्य एवं त्यागपूर्ण जीवन अपनाते हुए आदर्श नागरिक बनने का मार्ग प्रशस्त करेंगे।

डॉ. जयालक्ष्मी ने हमारे प्रिय पूर्व प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री जी के जीवन से जुड़े महत्वपूर्ण प्रेरक पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि अत्यंत साधारण परिवार में जन्में शास्त्री जी के जीवन से हमें श्रम के महत्व की शिक्षा मिलती है। राष्ट्रीय स्वाभिमान एवं गौरव को राष्ट्रीय फलक पर प्रतिपादित करने का श्रेय भी हमारे प्रिय पूर्व प्रधानमंत्री जी को है।